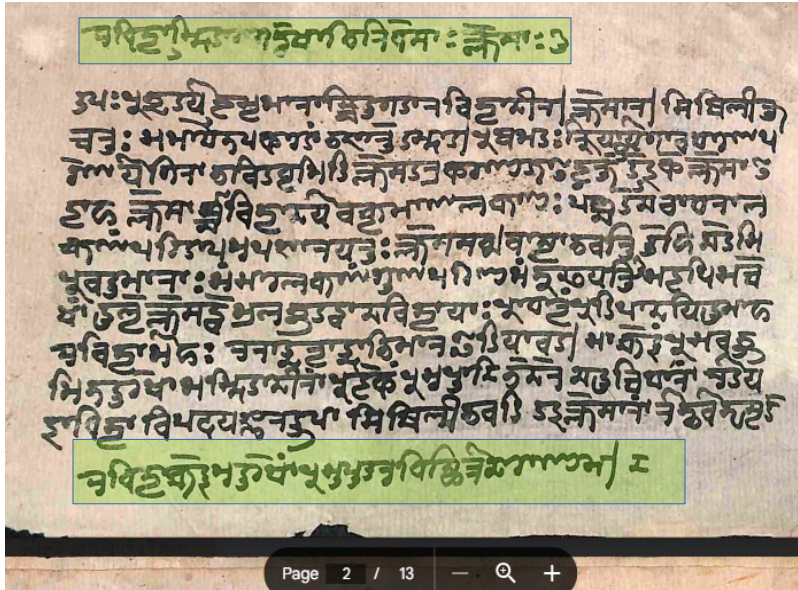


Title : Yoga Sutra - Vataka Natha Puja- Shri Dakshinamurti Stotram

Yoga Sutra (Patanjali)



सू० ३-४]

पातञ्जलयोगसूत्राणि ।

अथ के क्लेशाः कियन्तो वेति—

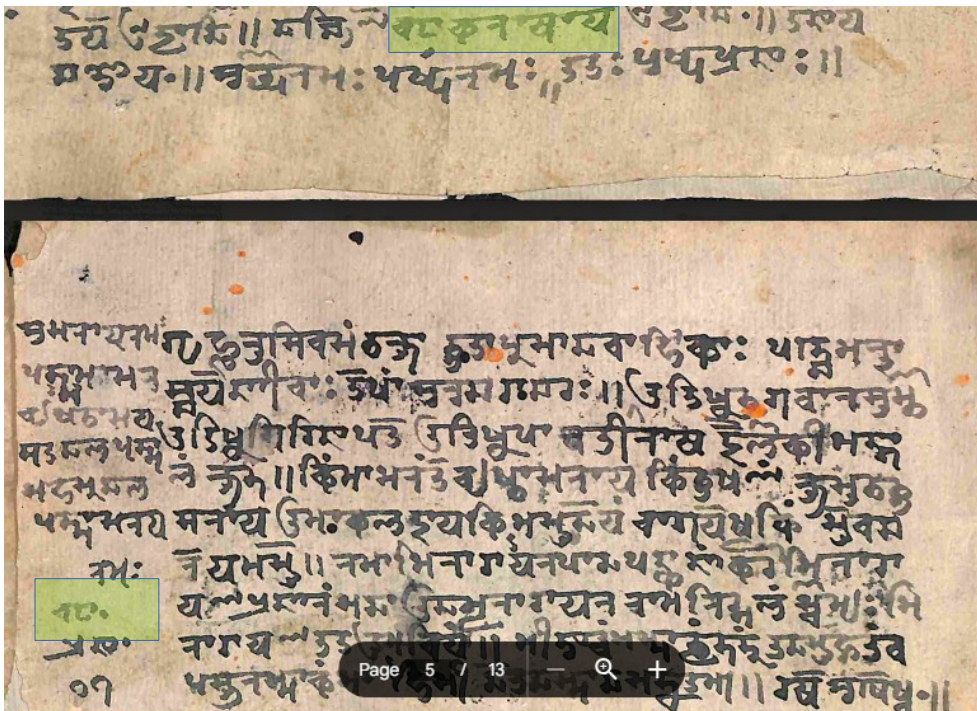
अविद्यास्मितारागद्वेषाभि-
निवेशाः क्लेशाः ॥ ३ ॥

क्लेशा इति पञ्च विपर्यया इत्यर्थः । ते स्पन्दमाना गुणाधि-
कारं द्रढयन्ति, परिणाममवस्थापयन्ति, कार्यकारणस्रोत उन्नम-
यन्ति, परस्परानुग्रहतन्त्री भूत्वा कर्मविपाकं चाभिनिर्ह-
रन्तीति ॥ ३ ॥

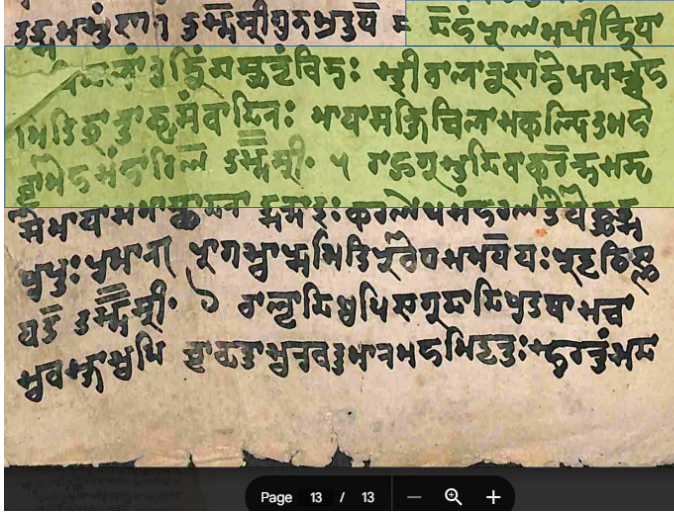
अविद्या क्षेत्रमुत्तरेषां प्रसुप्त-
नुविच्छिन्नोदाराणाम् ॥ ४ ॥

Ref: <https://archive.org/details/patanjaliyoga/page/n67/mode/2up?view=theater>

Vataka Natha Puja



Shri Dakshinamurti Stotram



देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं
विदुः स्त्रीवालान्वजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ता भृशं
वादिनः । मायाशक्तिविलासकल्पितमहाव्यामोह-
संहारिणे तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणा-
मूर्तये ॥ ५ ॥

Ref : <https://archive.org/details/Dakshinamurti.Stotra.of.Sri.Sankaracharya.with.Commentaries/page/n25/mode/2up>

८५

भनभुकेउनयभन सुये भनैये भनै सुये भुगी गिधः वी
भनभै नरुठ भिउ वणीद्विधुतः भनभिउद्वभन॥ यव
भुव॥ कन भिभु भवगु वगम ठयभयक वभुग। रु
नम्वविभिवु वभुपमेठिउ ॥ ठवयभवगु ॥ ठि वभु
परिकल यनभनभुः ॥ यभपवउ ॥ उपभुभुभः यभु
पवीउ ॥ भुवलउग रभिउं भिवुयभु पमेठिउ नीनक
भयभउ गुरुन पभेभुगि ॥ ठवयभवगु ॥ ठि॥
यभुपवीउ वभुनभः ॥ गनुः ॥ सुउगीगु भउप्रभुभु
यभभुभभभुउभु ॥ गनु ॥ भवेभुभुभु

उभययाम ॥ दुनुमिवमंठजु कुडाधुमायवादिक्कः पादुभनु
पदुभामन मयैलीवः इथां सुवम गमः ॥ उडिधु गवानमुमु
उडिधुमिगिरपउ उडिधुय वडीनय इलेकीभरु
मडलपम लं कुमे ॥ किंभामनंउ वधुभनय किंठप लं कुमुठु
पदुभनय मनय उभः कलइयकि भभुय वगयधकि सुवम
नयभमु ॥ नमभिना गयनय यदु लं कर भितरा
य प्रलनंभम उरुभन गयन वभ निमलं धुमः मि
नगय उड उभविये ॥ भीरुवभ महुंरुं उरुमुठु उव
पमुनभ कंभ दिमी उरुमभ ममुउमा ॥ रसै मयिधु ॥

रमः
५८.
५९.
०१

उच्चायगः कर्त्तृपदीती रालीमग दुभिलयवय
यागसमभुवः ऊपुमी विपुया विपुमभुते नावित
किल मपुमभुते ॥ नगकेतु ॥ भवते ॥ मयपी द
दुपी द ॥ तिनमे मष्टः कर्त्तृपदीती भुल एधिष्टः मप
भवते मपिष्टः ॥ भवते ॥ सुवक्रमुभुपदं वक्र
कं ममगमं रगगपिउउपिउः ॥ येरुमभुउ
दिकं ॥ येरुमगी यदसु येरुपमस येरुम विमु
भवना विविध उमममय नमभुउ मवाः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथि च पूषा पूषा उगते भक्त्ये नीमक मृदा
कुर्यात् कलानला के भुगते नलिपना मि उः ॥ एवी वरु मे कुर्याद उल से
द निरु वे च य अम मित्र पि द उ सु त व द न कुर्या प्रयः ॥ ला य मे
उ म ले भू ला ठ मु ए न गे वः भवे पि ला ठे वि उ भू भ व ला नि वि
न न उ ॥ म वी दे हः भ म व दे ल गे उ म द मे सु ठः उ म नि य
उ द द म ला ठः पा य म स न उ ॥ अ य वृ य ठ वः ल ग वृ यो द उ
उ लो वृ य थ भू उि भो य म मि गो उ र न भा गि ले वि मि त्रे य भू रू पे
ह य म उ व वि न भू वी दे म प्रो प लेः क उ म स द्वि य म ह मे भू ह उ
ह उि भू र ग द म उ र वि रु भू उ मि त्र पी म म मि उे ल न भू न म
पि भू उ र म मि य उ उ र ग मि न मः भू य उ ल क म सु ठे य ल उ
वृ ये वा च भू र वी प ल द उ म उ र वि रु भू उ उ म मं क लि र वा
भू म रि रु गे पि म उ र ये व ल य उ रि ये रि रु भू उ व म नं म
॥ ला म य नि मि उि म स ह म गे क म ल म उ द य उ नै म ह म

भठिमिवागोउधुनभा विदःठल उपनंकगेभिठल उदमेउय
 दःठलपेकं कगेभिठल सुभुभुभापेकं विदंउवउभु
 कुं सपेइइभभा पेकं विदःठलपेकयभिनमः उपयभाभु
 उरुभुभुः पुनःपेकं इठुभभा उपनं भएनउमएभुभुः पुनः
 हभभा उउयं पुनःपेकं भल्लन उउल्लन उउल्लभुभुः
 भुनगपिठुभभा उपनं पेकं पुनःभुवभेपिरुभुभुभुभु
 यदुपपुपेभुपेभंभुपु ॥ मिमिमकिउपेभंभुपु ॥ मिमिमिउ
 हंरभः उउपुपिउदउ विमिवायनभः मकुयनभः प्रए विउ
 उउयनभः भल्ल विदंविदुउयनभः भए विदुमिवउयनभः
 सुप सुपुहंभुपु ॥ सुपुभुठिसुयं विदःठल सुभुभुभा
 पेकं विदंउवउभुयभिकुं ० विदःठल उपयभिनमः मिवा
 मेउपनंसीपुउभा उविदंउभनंकुभिकुं सुपीयमिसुपुः उउपु

CC-0. In Public Domain. An eGangotri Initiative